विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय आश्रम

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत। दिनांक 27 मई 2020

वर्ग अष्टम। शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

दिव्य वाणी द्वितीयः पाठः

कविकुल गुरू: कालिदास:

कालिदासेन अनेकान् ग्रन्थान् अरचयत् तेषु ' रघुवंशम्', कुमारसंभवम् नामदधयम महाकाव्यम् , ' मेधदूतम् ' नामकं खण्डकाव्यम् , मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, चेति त्रीणि नाटकानि सन्ति। कालिदास ने अनेक ग्रंथ की रचना की उसमें रघुवंशम् कुमारसंभवम् नाम आदि महाकाव्य है। मेघदूतनामक ग्रंथ खंडकाव्य है। मालविकाग्निमित्रम् ,विक्रमोर्वशीयम् और अभिज्ञान शाकुंतलम् आदि तीन नाटक हैं।

तस्य नाटकेषु, अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटकम् न केवलं संस्कृत साहित्ये अपितु विश्वसाहित्येऽपि प्रसिद्धमस्ति।

उनके नाटक में अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक न केवल संस्कृत साहित्य में बल्कि विश्व साहित्य में भी प्रसिद्ध है।

उपमयाः प्रयोगे कालिदासः प्रसिद्धमस्ति। उपमा के प्रयोग में कालिदास प्रसिद्ध है।

कालिदासस्यकाव्यानां नाटकानां च पठनेन दृश्यनि उपस्थितानि इव प्रतियन्ते। कालिदास के काव्य और नाटकों को पढ़ने से वर्तमान दृश्य प्रतीत होता है।

प्रकृतिवर्णने, शब्दानां उचितं प्रयोगं तस्य रचनासु सर्वत्र दृश्यते।

प्रकृति वर्णन उचित शब्दों का प्रयोग उनके रचनाओं में सब जगह दिखाई पड़ते हैं।

कालिदासः भारतस्य 'शेक्सपीयर' कथ्यते। कालिदास भारत के शेक्सपियर कहे जाते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के लकार पुरुष तथा वचन लिखिए

शब्द	लकार	पुरुष	वचन
(क) आसीत्	लङ्	प्रथम	एकवचन
(ख) जानाति			
(ग) कथ्यते			
(घ) सन्ति			
(ङ) मन्यते			
(च) अभवत्			